शीला माता
का
जीवन परिचय

-: लेखक :-
शिवशंकर गर्ग
सीकर (राजस्थान)

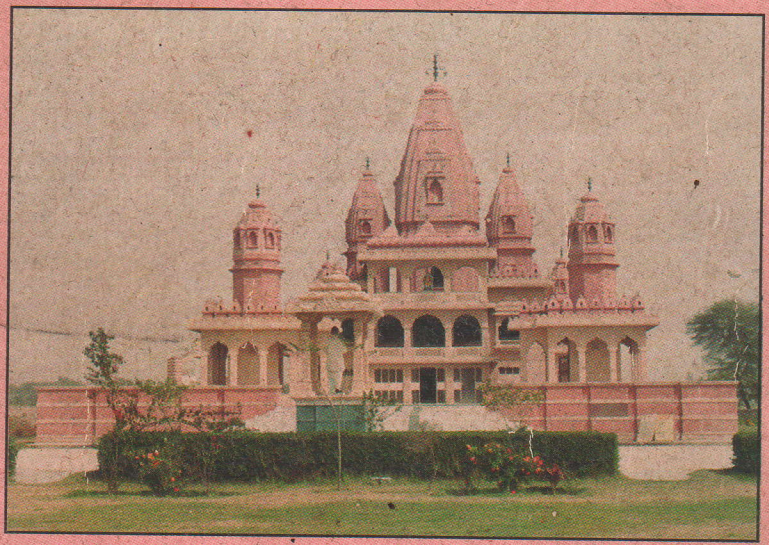

-: प्रकाशक :-
शीतलकुमार अग्रवाल

-: अध्यक्ष :-
अग्रोहा विकास संस्थान
अग्रसेन भवन, 251 ठाकुरद्वार रोड, बम्बई 400 002

परिचय

खक :-

ंकर गर्ग

राजस्थान)

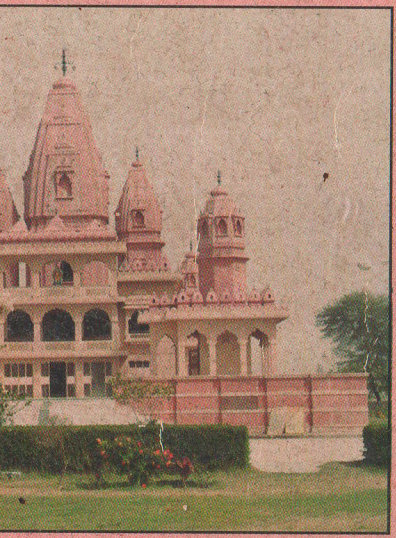

ाशक :-

ार अग्रवाल

ध्यक्ष :-

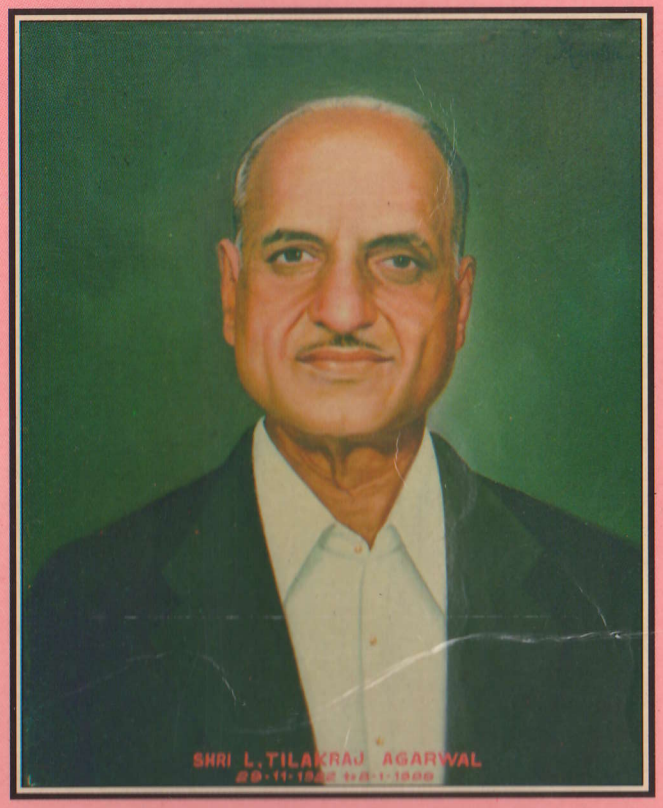

स्व. सेठ श्री तिलकराजजी अग्रवाल

अग्रवाल शिरोमणि

स्व. श्री तिलकराजजी अग्रवाल

– शिवशंकर गर्ग

अग्रवालों की जन्मभूमि 'अग्रोहा' अब एक विशाल नगर बनने की ओर अग्रसर है। आज से दो दशक पूर्व तक 'अग्रोहा' हिसार से कोई बीस किलोमीटर दूर उपेक्षित एक छोटा सा गाँव था। इसे तीर्थस्थान बनाने के लिए गिने चुने जिन व्यक्तियों ने भागीरथ प्रयत्न किया, उनमें श्री तिलकराजजी अग्रवाल का नाम प्रथम पंक्ति में लिया जाएगा।

श्री तिलकराजजी का जन्म स्यालकोट के डसका नामक ग्राम में २९ नवम्बर, १९२२ को श्री हेमराज अग्रवाल के पुत्र रूप में हुआ। आपके पिता सामाजिक कार्यों में रुचि रखते थे। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'की उक्ति के अनुसार श्री तिलकराजजी भी बाल्यकाल से समाजसेवा एवं देशसेवा में अपना समय लगाने लगे। विद्यार्थीजीवन में ही आप काँग्रेस के कार्यक्रमों में सम्मिलित होने लगे। काँग्रेस ने जब विदेशी वस्त्रों के बहिस्कार का आंदोलन प्रारंभ किया तब आप उसके अगुआ रहे।

आप अग्रवाल समाज एवं आर्य संस्कृति के शुभ चिन्तक थे। आपने अग्रवाल युवक समाज एवं अग्रवाल संघ, स्यालकोट की स्थापना की। आर्यकुमार सभा एवं आर्य वीर दल का गठन कर राष्ट्रविरोधी ताकतों से संघर्ष किया। आर्य समाज द्वारा 'हैदराबाद आन्दोलन' किया गया, तब आपने तन-मन-धन से सहयोग दिया। पंजाब व्यापार मण्डल ने बिक्रीकर के विरुद्ध आन्दोलन किया उसके सत्याग्रह में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण आपको २५ दिन के कारावास की सजा मिली।

पंजाब विभाजन के बाद आपको स्यालकोट छोड़ना पडा। दिल्ली में सन १९४७ में 'अग्रवाल मेटल कम्पनी' नाम से व्यवसाय प्रारम्भ किया। भारत विभाजन के कारण आर्थिक स्थिति कुछ डगमगाई। अतः व्यवसाय जमाने के लिए कठोर श्रम करना पड़ा। पर आपकी

मेहनत रंग लाई। व्यवसाय जम गया। बम्बई में भी १९६२ में अग्रवाल मेटल कं. का काम चालू किया।

दिल्ली में 'अग्रवाल सभा'की स्थापना की। उसके बाद तो अग्रवाल संस्थाओं की एक श्रृंखला ही बन गई। अग्रवाल अस्पताल, शक्तीनगर, और अग्रसेन बगीची ट्रस्ट की स्थापना की। आप अग्रसेन भवन ट्रस्ट, महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट, हरिद्वार इत्यादि के संस्थापक ट्रस्टी हुये। आपने अमेरिका, कैनेडा इत्यादि विदेशों में अग्रसेन सभा की स्थापना कराई है। अग्रसेन सभा, लंदन को सक्रिय सहयोग प्रदान किया। श्री तिलकराज अग्रवाल के सन् १९६५ में अग्रवाल सेवा समाज, बम्बई के अध्यक्ष बनने के पश्चात् बम्बई में अग्रवालों के संगठन का एक नया सूत्र प्रारंभ हुआ। बम्बई में अग्रसेन भवन आपकी ही देन है।

अग्रोहा का नवनिर्माण करने के लिए मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एवं अन्य अग्रवाल कार्यकर्ताओं से मिलकर 'अग्रसेन ईंजीनियरिंग एण्ड टॅक्निकल कालेज सोसायटी' बनाई। सोसायटी का रजिस्ट्रेशन करवाकर ४०० बीघा भूमि अग्रोहा में कालेज बनवाने के लिए खरीद ली। परिस्थितिवश टेक्निकल कालेज की योजना क्रियान्वित नहीं हो सकी तब अग्रोहा में मण्ड़ी बनाने की योजना बनाई, पर यह योजना भी अपेक्षित सहयोग न मिलने के कारण क्रियान्वित नहीं हो सकी।

५-६ अप्रैल सन १९७५ को श्री रामेश्वरदास गुप्त के सहयोग से अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में 'अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन' संस्था का गठन किया गया और अग्रोहा तीर्थ के रूप में विकसित करनेका निर्णय भी लिया गया। आपको इस कार्य का संयोजक बनाया गया। आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक संरक्षक ट्रस्टी बने। अग्रसेन ईंजीनियरिंग एवं टेक्निकल सोसायटी की भूमि में से निःशुल्क २३ एकड़ भूमि अग्रोहा तीर्थ बनाने केलिए दे दी। इस कार्य को गति देने के लिए 'अग्रोहा विकास ट्रस्ट' बनाकर पंजीयन करवाया और आयकर से मुक्ति प्रमाणपत्र प्राप्त किया। २१ सितम्बर १९७६ को निर्माणकार्य का शिलान्यास हुआ।

सन् १९७७ में इस स्थान पर रेत का टीला था। पानी का पूर्णतः अभाव था। निर्माण कार्य प्रारम्भ करना असम्भव तो नहीं पर कठिन अवश्य था। मई में प्रचण्ड गरमी और रेगिस्तान की धूलभरी तेज आँधियों में निर्माणकार्य शुरु हुआ। २२ कमरों की अतिथिशाला और उनके सामने बरामदे बनना चालू हुए। निर्माण कार्य आशानुकूल गति से चला। पानी का अभाव दूर करने के लिए सरकारने वाटर वर्क्स बनाया। नवम्बर १९७८ में दिल्ली में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का चौथा सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में अग्रोहा में निर्माणाधीन मंदिर का मॉडल, जो काँच पर बना हुआ था, की निलामी की गई। श्री तिलकराजजी ने ५१ हजार रूपये देकर यह मॉडल खरीद लिया। अतिथिशाला के कमरों के निर्माण के लिए स्वयंने धन दिया तथा अपने सम्बन्धियों एवं परिचितों से लगभग तीन लाख रूपये एकत्रित किये। शक्ति सरोवर के निर्माण एवं श्री अग्रसेनजी के मंदिर के निर्माण का कार्य भी शुरु किया पर कार्यकर्ताओं मे मतभेद हो जाने के कारण विकास ट्रस्ट के कार्यों से पृथक होना पड़ा।

श्री तिलकराजजी तन-मन-धन से अग्रोहा का विकास करने का संकल्प ले चुके थे। अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने 'अग्रोहा विकास संस्थान' नाम से एक नई संस्था बनाई। अग्रोहा विकास ट्रस्ट लगभग एक कि.मी. दूर 'शीला माता की मढ़ी बनी हुई थी। स्थानीय नागरिक एवं दूरस्थ अग्रवाल परिवार यहाँ अपने बच्चों का मुण्डन करवाने आते और 'मनौती' करते। तिलकराजजी ने इस जीर्णशीर्ण मढ़ी को भव्य मंदिर में बदलने का निश्चय किया। 'अग्रोहा तीर्थ'के महत्व के अनुकूल मंदिर भव्य एवं दर्शनीय बने, इस दृष्टि से अनेक शक्तिपीठों की यात्रा की। लेखक सहित अनेक विद्वानों की सम्मति ली, और शीला माता के मंदिर के निर्माण में जी-जान से जुट गये। धन संग्रह से लेकर निर्माण-सामग्री क्रय करने तक का कार्य स्वयं करने लगे। बम्बई से वायुयान द्वारा दिल्ली आते और दिल्ली से कार द्वारा अग्रोहा पहुँचते। साठ-पैंसठ वर्ष की अवस्था में भी उनके शरीर में युवकों जैसी स्फूर्ति थी।

८ जनवरी १९८८ को हृदय गति रुक जाने से ६५ वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया। आपके निधन की खबर सुनते ही सम्पूर्ण अग्रवाल जगत में शोक छा गया। दिल्ली,

कलकत्ता और बम्बई सहित अनेक जगहों में शोकसभाओं का आयोजन किया गया। हरियाणा के पूर्व मुख्य मंत्री एवं अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष बनारसीदास गुप्त, सम्मेलन के महामंत्री प्रदीप मित्तल सम्मेलन के प्रथम अध्यक्ष एवं सांसद श्रीकिशन मोदी ने भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की।

अग्रोहा में शीला माता के भव्य मंदिर का शेष रहा निर्माण कार्य उनके सुपुत्रों श्री शीतल कुमार अग्रवाल व श्री विनोदकुमार अग्रवाल ने पूर्ण किया। अग्रोहा विकास संस्थान का कार्य भी श्री शीतल कुमार अग्रवाल ही संभालते हैं।

स्व. तिलकराजजी अग्रवाल जैसे द्रढप्रतिज्ञ, समाजसेवी, उदारमना, उत्साही कार्यकर्ता बहुत कम देखने में आते हैं। शीला माता के मंदिर निर्माण सम्बन्धी परामर्श लेने दो बार वे सीकर मेरे निवास स्थान पर आये। यह उनकी लगन एवं उत्साह का उदाहरण था। शीला माता का भव्य मंदिर उनकी कीर्ति की अमर निशानी है।

श्री तिलकराजजी के स्वर्गवास के पश्चात शीला माता के मंदिर के निर्माण का कार्य अग्रोहा विकास संस्थान के तत्वाधान में उनके परिवार और शुभचिंतकों ने अपने हाथ में लेकर उसे चार वर्ष मे पूरा कराया।

१६ फरवरी १९९२ को शीला माता के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा पुरी के श्री पीठाधीश्वर जगदगुरु श्री शंकराचार्यजी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर का उद्घाटन हरियाणा के मुख्य मंत्री चौ० भजनलाल एवं श्री स्व. तिलकराजजी की प्रतिमा का अनावरण वित्त मंत्री श्री मांगेराम गुप्ता ने किया। अध्यक्षता हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता ने की।

आज जिस गति से अग्रोहा का विकास हो रहा है, जिसमें महाराजा अग्रसेन मैडिकल कालेज और एक हजार बिस्तरों का हास्पिटल तथा शीला माता के मंदिर का सौन्दर्यकरण और ट्रस्ट के कार्यों को देखकर स्व.तिलकराजजी ने जो अग्रोहा निर्माण का स्वपन संजोया था, उसे देखकर स्वर्ग में उनकी आत्मा अवश्य ही प्रफुल्लित हो रही होगी।

श्री शीतलकुमार तिलकराज अग्रवाल

पूर्वजों से मिली अनमोल विरासत को अनदेखा करके अंततः गंवा देने वाले तो पग पग पर मिल जाते हैं। परन्तु अतीत की विरासत को ना सिर्फ संजोकर रखने वरन उसे लगातार समृद्ध करने वाले लोगों के नाम अंगुलियों पर ही गिने जा सकते है। धर्म, संस्कृति, कला और लगन आदि के संदर्भ में यह बात पूर्णता की सीमा तक सही है; विरासत में प्राप्त संस्कारो की ऐसी संस्कृति को समृद्ध करनेवालो में श्री शीतलकुमार अग्रवाल का ऐसा ही व्यक्तिव हमारे समाज के लिये एक उत्कृष्टतम् आदर्श है।

अग्रोहा तथा महाराजा अग्रसेन के आदर्श भी ऐसी ही विरासत हैं। वर्तमान पीढ़ी ने, खण्डहर बन चुकी इस विरासत को भव्य रूप देना प्रारंभ किया है। अग्रोहा विकास में लगे ऐसे दीवाने लोगों में मुंबई निवासी स्वर्गीय श्री तिलक राज अग्रवाल का नाम अपने आप में विशिष्ट महत्व रखता है, उन्होंने अपनी लगन परिश्रम और निष्ठा से अग्रोहा को तीर्थ बनाने की योजना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता संग्राम के जुझारू व्यक्तित्व,

देश विदेश में अग्रवाल संगठन के मजबूत स्तंभ, श्री तिलकराज जी की निष्ठा का प्रतीक मां शीला का भव्य मन्दिर अग्रोहा में शान से खड़ा है। श्री तिलकराज जी नें मन्दिर की योजना बनाई, क्रियान्वित भी की परन्तु पूर्ण मन्दिर स्वयं की आंखों से नहीं देख पाये। तिलकराजजी ने ८ जनवरी १९८८ को शरीर छोड़ दिया।

शीतलजी ने पिता की अग्रोहा निष्ठा, संगठनप्रेम दानशीलता तथा लगन और उत्साह को अपने जीवन का अंग बनाया और पिता के काम पर 'काल' ने जो रोक लगाई थी, उसे हटाते हुए 'मां शीला' के मंदिर को पूर्ण किया। शीतलजी को देखकर लगता है कि तिलकराज जी अभी जीवित हैं और जीवित रहेंगे, वर्षों-सदियों नहीं युगों-युगों तक। गीता में कहा गया है... "सच्चा कर्मयोगी अंततः फल पा ही लेता है।" तिलकराजजी ने अपने स्वप्न को अपने सुपुत्र शीतलकुमार की आंखों द्वारा पूर्ण होते देखा।

श्री शीतल अग्रवाल का जन्म २ नवंबर १९४७ को हुआ। आज़ादी की सुबह में जन्में शीतलजी आज़ाद प्रवृत्ति के ही हैं वर्ना मायामोह की जंजीरों से मुक्त होकर कितने लोग सामाजिक और धार्मिक कार्यों के लिये समय निकाल पाते हैं? मां शीला मन्दिर की पूर्णता, सौन्दर्यीकरण तथ नियमित धार्मिक आयोजनों की समुचित व्यवस्था के साथ देखभाल तो शीतलजी के लोक परलोक खाते की जमारकम है ही, अन्य कई और उपलब्धियाँ भी हैं। तिलकराज चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई, महाराजा अग्रसेन आश्रम, हरिद्वार, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, डी. ए. वी. कालेज-भाण्डुप मुंबई, के आप सक्रिय ट्रस्टी है। महाराजा अग्रसेन मेडीकल कोलेज-अग्रोहा एवं अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्य हैं। अग्रोहा विकास संस्थान मुंबई के ना सिर्फ अध्यक्ष हैं वरन उसकी जीवन धारा हैं। अन्य अनेक संस्थायें हैं जिनसे शीतलजी प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। बॉम्बे मेटल एक्सचेंज लिमिटेड-में उपाध्यक्ष, बॉम्बे नॉन फेरस मेटल एसोसियेशन में अध्यक्ष तथा लायन्स क्लब इन्टरनेशनल मे रीजन चेयरमेन रहेकर शीतलजी ने इन संस्थाओं को एक नई दिशा दी।

व्यवसायिक रूप से अग्रवाल मेटल कम्पनी (मुंबई) कलकत्ता आयरन ॲण्ड स्टील कम्पनी, कलकत्ता तथा अग्रवाल स्टील प्रोसेसर्स का काम आप कुशलता से देख रहे हैं। व्यावसायिक प्रतिष्ठा की बात यहाँ आवश्यक ना होते हुए भी कहना इसलिये जरूरी है क्योंकि यह उन लोगों के लिये आदर्श है जो अपनी व्यावसायिक मजबूरियों की आड़ में सामाजिक कार्यों से मुंह छिपा लेते है। शीतलजी के छोटे भाई श्री विनोदकुमार भी अपने परिवार के साथ इनके काम में सहयोगी है। पत्नी श्रीमती मंजू अग्रवाल तथा पुत्र समीर - सचिन - गिरीश भी इनके पुण्य कार्यों में हर पग पर सहयोगी हैं, चाहे वह अग्रोहा में शीला माता का मंदिर हो या मुंबई के ठाकुरद्वार मार्ग पर प्याऊ।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा १९९५ से प्रारंभ "श्री रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार" इस वर्ष (१९९६) मे श्री शीतलकुमार अग्रवाल को दिया गया है। यह पुरस्कार है उनकी अग्रोहा प्रेम भावना को...निष्ठा को...समर्पण को...ऐसी कर्मठता को जो मृत्यु को भी पार कर जाती है, एक जीवन से दूसरे जीवन तक लगातार चलती रहती है..।।

शीला माता का जीवन परिचय

– शिवशंकर गर्ग, सीकर

अग्रोहा अग्रवालों की जन्मभूमि है। प्राचीन समय में अग्रोहा एक विशाल नगर था। इस नगर में बावन करोड़ की सम्पत्ति के स्वामी सेठ हरभजनशाह रहते थे। इनकी इकलौती पुत्री का नाम शीला था। शीला का विवाह स्यालकोट के दीवान मेहताशाह के साथ हुआ था। शीला अपने समय की अद्वितीय सुन्दरी थी। स्यालकोट के राजा रिसालूने एक नौकर से शीला की सुन्दरता का वर्णन सुना, तब एक योजना बनाकर मेहताशाह को राजकार्यबहाने रोहतासगढ़ भेज दिया।

एक रात रिसालू शीला के महल में मेहताशाह का रूप बनाकर पहुँचा। शीला पैरों की आवाज सुनकर निद्रा से जग गई। उसने अपने कर्मचारियों को सहायता के लिये पुकारा। रिसालू उन्हें उत्कोच देकर अपने पक्ष में कर चुका था। उसने अपना परिचय देते हुए सहायता की याचना को निरर्थक बताया। शीला ने संकट का अनुमान तुरंत ही लगा लिया और झपट कर राजा के बाल पकड़ लिए। राजा को पृथ्वी पर पटक कर उसकी छाती पर बैठ गई। अपने आंचल से कटारी निकाल कर जब शीला ने राजा की छाती में घुसाना चाहा, तब राजा ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी। शीला को दया आ गई, उसने राजा को छोड़ दिया।

राजा ने दूसरे ही दिन एक सेवक को रोहतासगढ़ भेजा और मेहताशाह को बुला लिया। मेहताशाह घर पहुँचकर जब विश्राम करने के लिए शय्या पर लेटा, तब कमर में कुछ चुभा। बिछोने की चादर हटाकर देखा, तो सोने की अंगूठी मिली, उस पर रिसालू का नाम लिखा था। मेहता ने शीला को बुलाकर पूछा, पर शीला संतोषप्रद उत्तर नहीं दे सकी। नौकरों ने फुसफुसाट कर शीला को चरित्रहीन बताया। शीला के लिए अब जीवन भार बन गया। हरभजन शाह को जब इस घटना की जानकारी मिली, तब वह शीला को अग्रोहा ले गये।

कुछ वर्षों के बाद एक दिन मेहता शाह की एक सेविका ने क्षमा मांगते हुए कहा– "शीलादेवी पतिव्रता है।" मेरी मृत्यु निकट है, अतः मैं सत्य जानकारी देकर अपने मन के बोझ को उतार रही हूँ। मुझसे जो भूल हुई, उसी कारण उस देवी को कष्ट सहना पड़ा। शीला की शय्या पर राजा रिसालू की अंगूठी मैंने ही छिपाई थी। इस कार्य के लिए राजा से मुझे बहुत धन मिला था। मैं लोभ में अंधी हो गई थी। आप मुझे क्षमा कर दो।"– मेहता शाह इस सत्य को सुन कर पागल हो गये। शीला को मुँह दिखाने लायक नहीं रहे थे। पश्चात्ताप की आग में जलते हुए मेहता शाह वन - वन भटकने लगे। अग्रोहा पहुँचने के लिए आतुर मेहता शाह गिरते-पड़ते अग्रोहा के निकट पहुँचे। भूख-प्यास के कारण उनका वहीं देहान्त हो गया। शीला देवी को जब पति के निधन की सूचना मिली, तब रोती हुई वह पति के शव के पास पहुँची और मुर्छित होकर पति के शव पर गिर पड़ी। उसके प्राण पखेरू उड़ गए। दोनों का अन्तिम संस्कार एक साथ कर दिया गया। राजा रिसालू को जब इस घटना की जानकारी मिली, तो उसे आत्मग्लानि हुई। अग्रोहा पहुँचकर उसने आत्महत्या करना चाहा पर गुरु गोरखनाथ ने सलाह दी कि राजमोह को त्याग कर योगी बन जा। इससे तेरा कल्याण होगा। राजा ने गोरखनाथ के आदेश का पालन किया।

यह घटना एक हजार वर्ष से अधिक पुरानी है। इस अवधि में शीला की चिता के स्थान पर अनेक बार मंदिर बना और टूटा। अब श्री तिलकराजजी अग्रवाल के अथक प्रयासों से वहां अत्यन्त भव्य मंदिर बन गया है। जिसमें आदि शक्ति मां दुर्गा, विद्या-बुद्धि दायिनी मां सरस्वती, ऋद्धि-सिद्धि दायिनी मां लक्ष्मी, शिव परिवार, श्री रामदरबार, श्री राधा गोविन्द, श्री रामभक्त हनुमानजी आदि देव प्रतिमायें एवं अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेनजी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

कथा काव्य

शीला का शील

कथासार : "अग्रोहा के सेठ हरभजन शाह की पुत्री शीला का विवाह स्यालकोट के दीवान मेहता शाह के साथ हुआ। शीला की सुन्दरता की चर्चा स्यालकोट के राजा रिसालू ने सुनी। उसने मेहता को रोहतासगढ़ भेज दिया और शीला के शीलहरण का असफल यत्न किया। असफल राजाने शीला के पलंग पर अंगुठी रखवा दी। रोहतासगढ़ से लौटने पर मेहता ने शीला को कुलटा समझ त्याग दिया। शीला अग्रोहा चली गई। एक दिन दासी ने मेहता को राजा के षडयंत्र की जानकारी देकर शीला को पतिव्रता बताया। मेहता पागल हो अग्रोहा शीला से मिलने गया, पर भूख-प्यास को सहता मेहता स्वर्गधाम जा पहुँचा। शीला को जब सारी बातें ज्ञात हुई, तो पति के शोकमें उसने भी प्राण त्याग दिए।"

"हो अमर सुहागिन पुत्रवती, जीवन मे सब सुख पाना तू।
पति ही परमेश्वर है जग में, शीले पतिव्रत धर्म निभाना तू ।।
तू श्रेष्ठवंश में जन्मी है, यह बात भूलना मत बेटी।
दोनों कुल को ऊँचा करना, यह सीख विसरना मत बेटी ।।"

'हे पूज्य पिता', बोली बेटी, आगे नहीं कुछ भी बोल सकी।
मन में कितनी ही घटा उठी, पर जीभ नहीं वह खोल सकी ।।
रसना को पा असमर्थ, व्यर्थ, आँखों ने धीरज त्याग दिया।
जो कहा नयन ने नयनों से, वह पितृ हृदय ने जान लिया ।।

आसूं आशीशे गीत लिए, यों विदा हो गई पीहर से।
जाना पहिचाना सब छूटा, नेह-डोर बंधी पति के घरसे ।।
विख्यात सेठ अग्रोहा के, हरभजन शाह बावन क्रोड़ी।
उनकी पुत्री से स्यालकोट, मेहताजी से जोड़ी-जोड़ी ।।

शीला जा पहुँची स्वसुर सदन, महलों में गूंजी शहनाई।
इस मधुर मिलन की बेला में, सबने मनकी निधि सी पाई ।।
विष्णु-लक्ष्मी, शिव-पार्वती, रति-मन्मथ, ब्रह्मा-ब्रह्माणी।
शशि-सुधा मिले वसुधा पर ज्यों, मिल गई इन्द्रको इन्द्राणी ।।

दो देह नेह से एक हुई, सुख श्रोत वहाँ पर बहता था।
आदर्श प्रेम की गाथा यह, हर घर का बच्चा कहता था ।।
कुछ लोग यहाँ पर ऐसे हैं, परसुख से दुःखी रहा करते।
जा कहा रिसालू राजा को, मुँह लगा एक हिम्मत कर के ।।

"राजन, मेहता की पत्नी सी, देखी न सुनी है और कहीं।
वह अजब गजब सेवक भोगे, स्वामी को जो सुख मिले नहीं ।।
मुख शरद ऋतु का पूर्ण चन्द्र, प्रफुल्ल कमल से नयन बड़े।
बिम्बाफल से हैं युगल अधर, बोले तो जैसे फूल झड़े ।।

दाडिम दाने सी दंत पंक्ति, मुस्काने में मोती बिखरे।
नासिका सुआ की चोंच सरिस, चम्पा देही देखे बिखरे ।।
उत्तंग शिखर से उन्नत कुच, मानों कटि लोच लवंग लता।
भुज कमल नाल, स्तम्भ जंघ, विधि का कुछ रहस्य न लगा पता ।।"

शीला की सुन्दरता सुनकर, नृप चकराया कुछ ललचाया।
अनुचर भेजा मेहता के घर, उसको महलों में बुलवाया ।।
"आओ, प्रिय मित्र, यहाँ बैठो, बाजी खेलें दो-चार आज।
गोटियाँ हेम की मखमल की, चौपड़ सजवाये सकल साज ।।"

फिर रत्न जड़ित पासे लेकर, राजा ने गुरू को याद किया।
जाजम आए तीन देख, अपशकुन हृदय में मान लिया ।।
मेहता ने पासे ले कर में, उनको शीला की आन दिला।
जब दाव चला तो पौ-बारह, पच्चीस देख मन कमल खिला ।।

तब राव रिसालू ने पूछा, "शीला है किस का नाम कहो।
करते हो याद खेल तक में, ऐसा क्या गुण है खास कहो ।।"
कुछ संकुचित हो कुछ गर्वित हो, बोले मेहता मुस्कराकर के।
"राजन शीला घर की शोभा, मैं धन्य शीला को पाकर के ।।"

सुन हुआ रिसालू उत्प्रेरित, मन मद बिना हुआ नसीला सा।
जो कुछ भी सुन्दर दिख पड़ता, सब लगने लगता शीला सा ।।
आँखों में शीला ही शीला, बस गई हृदय में कुटलाई।
मेहता से बोला "प्रिय मित्र, एक कठिन समस्या है आई ।।

सुनता हूँ, रोहतासगढ़ में, राज द्रोह के बीज फले।
कोई तुमसा वहाँ जाए तो, दुष्ट-जनों का सिर कुचले।।
कुछ काम और भी करना है, सौ घोड़े लाना हैं ऐसे।
मुँह मांगा मोल लगे चाहे, पर लांघ सकें सिन्धु जैसे।।''

मेहता शाह बोले, ''सेवक हूँ, हर हुकम बजा कर लाऊंगा।
परदेश गमन से पहले मैं, शीला की सहमति चाहूंगा।।
इस तरह कुचक्रों में फँसकर, मेहता प्रवास में चला गया।
अवसर पा इधर रिसालू ने, षडयंत्र रचाया एक नया।।

मावस की घोर असित निशि में, राजा खुद मेहता सा बनकर।
रक्षक को धोखा दे पहुँचा, शीला के महलों के अन्दर।।
पद ध्वनि सुन शीला चौंक उठी, देखा प्रिय पति सा आंगन में।
कब आए, क्या क्या कर आए, कितने ही प्रश्न उठे मन में।।

मेहता की सी आवाज बना, नृप बोल उठा ''हे प्राण प्रिये।
तेरी स्मृति लायी मुझको, कैसे बिन प्यारी प्राण जिये।।''
स्वर-शक्ल लगी अनजानी सी, वह समझ गई कोई है लम्पट।
था रोम-रोम पति से परिचित, हो क्रोधित झपट उठी झटपट।।

''तू ठहर मूर्ख, रे धूर्त चोर, मैं अभी बुलाती अनुचर को।
मृत्यु देगी राज सभा, निश्चय ही प्रातः दुश्चर को।।''
''राज्य सभा दे दण्ड़ किसे, मै स्वयं रिसालू राजा हूँ।
इस स्वर्ग-पुष्प से राजभवन, मैं शोभित करना चाहता हूँ।।

रक्षक ही भक्षक है यहाँ पर, तब न्याय नहीं मिल सकता कल।
झट बाल पकड़ भू पर पटका, कह ''चख अपनी करनी का फल।''
नृप संम्भले उससे पहले ही, छाती पर चढ़ बैठी शीला।
ऑचल से कटारी खींच कहा, ''अब फिर से कह तू प्रिय शीला।।

राजा तो होता पिता तुल्य, संतान प्रजा उसकी होती।
पर कामी कुत्ते के जग में, भगिनी, बेटी, माँ नहीं होती।।
नारी-शक्ति साकार हुई, बन गई सिंहनी छुई-मुई।
नृप हुआ पसीने से लधपथ, सिर चकरा आँखें पथराई।।

कुछ समय बाद मूर्छा टूटी, बोला कर जोड़ करुण स्वर में।
'गौ' मान मुक्त कर दो मुझ को, संतान प्रजा मानूंगा मैं।।
नारी मन करुणा का सागर, बन मोम तुरंत ही पिघल गया।
अपराध क्षमाकर शीला ने, नृपकाल काल से मुक्त किया।।

चरण पकड़ नृप शीला के, बोला अतिनम्र विनीत स्वर में।
''इस दुःखित कथा को गुप्त रखो, जी सकूँ मान से मैं जग में।।''
संकेत क्षमा का पाकर नृप, निज प्राण बचाकर भाग गया।
है दया दुष्ट पर उचित नहीं, हर बार दयालू ठगा गया।।

अतृप्त वासना विष बन कर, राजा को डसती थी जैसे।
अपमान आग बन फूँक रहा, बदला लूँ मैं इस का कैसे।।
योजना बना डाली नृप ने, सूरज को दाग लगाने की।
कंचन को काच बताने की, पानी में आग लगाने की।।

शीला की दासी से मिलकर, करवाया विष बीजारोपण।
मेहता को लेने भेज दिया, नृपने चर एक कुशल तत्क्षण।।
राजाज्ञा पाते ही मेहता, लौटा प्रवास से हर्षाकर।
कुछ ऐसा अनुपम चुम्बक था, वह खिंचा चला आया घर पर।।

पति का आगमन सुना सहसा, बल्लरी खिली जो मुरझाई।
अति आतुर हो श्रृंगार किया, झट द्वार आरती ले आई।।
शशि देख कुमुदिनी विहँसी, बदली लख प्रमुदित मोर हुआ।
दो बिछड़े प्रणयी पुनः मिले, लम्बी निशि बीती भोर हुआ।।

कुछ स्वस्थ हुए जलपान किया, शीला से की मीठी बातें।
बीते विरहा के दिन कैसे, कैसे काटी सूनी रातें।।
सोचा पहले विश्राम करूं, मध्याह्न सभा में जाऊंगा।
जिस राज-काज से गमन किया, उसका सब हाल सुनाऊंगा।।

जैसे ही लेटा शय्या पर, कुछ गड़ा कमर में गोल-गोल।
विस्मित हो मेहता उठ बैठे, मखमली आवरण दिया खोल।।
गिर पड़ी राजमुद्रा स्वर्णिम, स्पष्ट रिसालू अंकित था।
ज्यों अंगारों पर पैर पड़ा, प्रेमी मन पीड़ित शंकित था।।

आकाश गिरा धरती खिसकी, विश्वास गया विष वास हुआ।
हिमपात हुआ आशाओं पर, सपनों का नन्दन नाश हुआ।।
"संभव नागिन का डसा बचे, नारी का काटा बचे नहीं।
देवी समझा डायन निकली, विधि ऐसी रचना रचे नहीं।।

संदेह सदेह अंगूठी थी, उसने ही निर्णय कर डाला।
हो गया पराजित प्यार पुरुष, नफरत ने पहनी जयमाला।।
तत्काल बुलाया शीला को, पूछा नृप आया क्यों? कैसे?
नयनों में घृणा, क्रोधित मन, वाणी में व्यंग भरा जैसे।।

वह पुरुष प्रकृति से परिचित थी, शक जाने क्या क्या कर डाले।
इस लिए बनी अनजानी सी, वह भेद छुपाया डरे-डरे।।
पड़ गया अग्नि में घृत जैसे, "कुलटे यह देख सबूत रहा।"
मुद्रिका दिखा मेहता बोले, "लख तेरा यह करतूत रहा।।"

तब सिसक - सिसक शीला बोली, "गंगा सी पावन हूँ अब भी।
है शपथ विष्णु व लक्ष्मी की, पतिव्रत धर्म रखा नित ही।।"
वनवास गर्भिणी सीता को, दे दिया एक अवतारी ने।
शक के कारण क्या क्या न सहा, इस भारत की सन्नारी ने।।

शीला अब अपने घर में ही, परित्यक्ता थी परदेशन थी।
सुध-बुध तन-मन की उसे नहीं, घर में रहती वह योगिन थी।।
वह दीपक बुझने जैसा था, जीवन में रस अब रहा नहीं।
हर भजन ले गए अग्रोहा, दोनों को कुछ भी कहा नहीं।।

दिन, रात और महिने बीते, ऋतुएँ कितनी ही बीत गईं।
एक बार दासीने मेहता से, डरते-डरते यह बात कही।।
"आ गया बुढ़ापा मरना है, ना जाने, मैं कब मर जाऊँ।
जो रहस्य हृदय का भार बना, कह दूँ तो सुख से मर जाऊँ।।

शीलादेवी थी सर्वश्रेष्ठ सीता सावित्री से बढ़कर।
विषबीज अंगूठी मैंने दी, रखी शय्या पर ललचाकर।।
दो दंड मुझे जो जी चाहे, स्वीकार करुंगी तन-मन से।"
बिखर गए भ्रम के बादल, तब सत्य सूर्य निकला फिर से।।

वह विरहानल में जलकर अब, रटने शीला का नाम लगा।
गिर गया स्वयं की नजरों से, बन-बन फिरता वह अलख जगा।।
रोगी, भोगी, ढोंगी, जोगी, कोई पंडित या पागल कहता।
वस्त्र फटे, भूखा प्यासा, मेहता पत्थर गाली सहता।।

गोकुल मथुरा में दूरी क्या? गोपियाँ गई क्यों नहीं वहाँ।
क्यों विरह सहा? प्रेमी मन को, समझा है जगमें कोई कहाँ।।
मेहता क्यों नहीं सुसराल गया, यह प्रश्न जटिल है अपने में।
विधि का विधान कुछ ऐसा है, प्रणयी पाता सुख सपने में।।

कब कैसे पहुँचा अग्रोहा, शीला शीला कह वहाँ पड़ा।
लोगोंने पहचानी मिट्टी, जब हंस विराने देश उड़ा।।
शीला जब सुन स्तब्ध हुई, सह सकी विरह ना छुई-मुई।
धरती कांपी, अम्बर डोला और किरण सूर्य के साथ गई।।

चंदन के रथ पर चढ़ी साथ, पति के संग ही उस लोक गई।
यों अमर सुहागिन हो जाना, नहीं बात यहाँ के लिए नई।।
राजा रिसालु के कानों तक, जा पहुँची जब यह करुण कथा।
वह आत्म ग्लानि में डूब गया, अन्तर को मथने लगी व्यथा।।

अग्रोहा आकर चिता बना, उसने भी जलने की ठानी।
गुरु गोरख पहुँचे उसी समय, ज्वाला में डाल दिया पानी।।
मन की मलीनता जल जाए, है बड़ा न आत्मदाह इससे।
तू राज मोह को छोड़-छाड़, बस अलख जगाता फिर अब से।।

बनी समाधि उसी जगह, शीलाकी स्मृति में सुन्दर।
नित जात जडूले होते हैं, बन गया वहाँ सुन्दर मंदिर।।
इस सन्नारी की प्रेमकथा, जो श्रद्धा सहित सुने गाये।
यह लोक और परलोक बने, शिवशंकर मनवांछित पाये।।

'शीला का शील' कविता पर सम्मतियाँ

'शीला का शील' कविता पढ़कर मन अति प्रसन्न हुआ! बड़ी सुन्दर रचना है। इसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

– तिलकराज अग्रवाल
प्रधान सम्पादक, अग्रवाल जागृति, बम्बई

'शीला का शील' काव्य कथा पढ़ी। यह रचना ओजस्वी भाषा में कवि हृदय से निकली अमर गाथा है, जिससे शीला माता अमर हो गई है और साथ में आपकी कृति भी अमर हो गई है।

– देवकी नन्दन गुप्त
संस्थापक, अग्रवंश शोध संस्थान, नई दिल्ली

'शीला का शील' एक महत्वपूर्ण रचना है। यह गर्व करने योग्य अच्छी रचना है।

– रामस्वरूप गर्ग, पत्रकार
जैन विश्व भारती, लाडनूं

'शीला का शील' पठनीय कविता है। समाज की अन्य नारियों के आदर्श जीवन पर भी ऐसी रचनाएँ लिखी जानी चाहिए।

– जगदीशप्रसाद सर्राफ
अध्यक्ष, अग्रवाल समाज, दांता (सीकर)

'शीला का शील' एक प्रभावपूर्ण रचना है। मैंने इसे अनेक बार पढ़ा है।

– सरस्वती कुमार दीपक
सम्पादक, अग्रवाल जागृति, बम्बई

'शीला का शील' अत्यन्त रोचक, प्रेरक एवं मर्मस्पर्शी है। विषय का प्रति पादन बड़ा ही हृदयस्पर्शी बन पड़ा है।

- डॉ. चम्पालाल गुप्त
मानद सम्पादक 'अग्रोहाधाम' मासिक

'शीला का शील' एक सशक्त रचना है।

- दुलीचन्द 'शशि'
प्रख्यात कवि, हैदराबाद (आन्ध्रा)

कवि परिचय

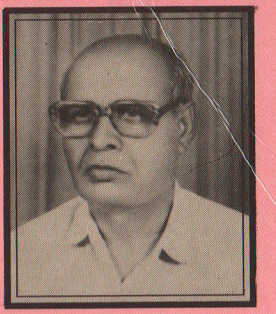

नाम : शिवशंकर गर्ग

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, इतिहास) साहित्यरत्न, प्रभाकर, आयुर्वेदरत्न, वैद्याचार्य, डी.एस,.सी.एच., एम.एड.

जन्मस्थान : गुढा साल्ट (सांभरलेक से ८ कि.मी.दूर)

साहित्यलेखन : सामाजिक समस्याओं एवं इतिहास पर सेंकडों लेख, कविताएँ प्रकाशित।
अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास कलकत्तासे प्रकाशित।
अग्रोहाधाम पत्रिका के राजस्थान अंक का लेखन

समाज सेवा :
- अग्रवाल समाज सांभर के संस्थापक एवं पूर्व मंत्री,
- अग्रवाल नवयुवक मंडल सांभरलेक के संस्थापक अध्यक्ष,
- सीकर जिला अग्रवाल समाज के संस्थापक महामंत्री,
- अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के पूर्वमंत्री,
- राजस्थान वैश्य महा सम्मेलन के उपाध्यक्ष,
- राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य - अ.भा. वैश्य महासम्मेलन
- पूर्व प्रचारमंत्री, राजस्थान अग्रवाल संघ
- परामर्शदाता - अग्रोहाधाम मासिक पत्र
- सदस्य सम्पादक मण्डल - 'अग्रोदक' जयपुर
- पूर्व प्रधान सम्पादक - अग्रसुधा, सीकर

सम्पर्क : द्वारा - सुधीर गॅस ट्रेडर्स, देवीपुरा पेट्रोल पम्प के पास, सीकर (राजस्थान) ३३२ ००१

-: भेंटकर्ता :-

विनोदकुमार अग्रवाल

ट्रस्टी

तिलकराज हेमराज अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट

107, ठाकुरद्वार रोड, बम्बई - 400 002

फोन : (ऑ.) 201 3281, 201 2067, 205 1434

(नि.) 364 5041, 362 3680

शीला माता
का
जीवन परिचय

-: लेखक :-

शिवशंकर गर्ग

सीकर (राजस्थान)

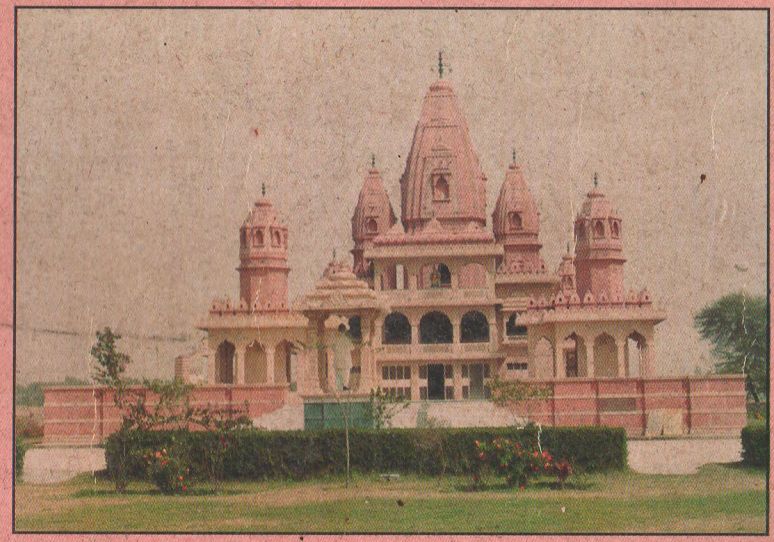

-: प्रकाशक :-

शीतलकुमार अग्रवाल

-: अध्यक्ष :-

अग्रोहा विकास संस्थान

अग्रसेन भवन, 251 ठाकुरद्वार रोड, बम्बई 400 002